ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

बी.एड. एवं बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

KEY WORDS: बी.एड., बीएसटीसी, शिक्षण, शैक्षिक उपलब्धि, अभिवृत्ति

श्रीमती मनका देवी — *(शोधार्थी) शिक्षा संकाय, टांटिया विष्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)*

*डॉ. प्रीति ग्रोवर** — *(Assistant Professor)शिक्षा संकाय, टांटिया विष्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)*
*Corresponding Author

ABSTRACT

वर्तमान शोध कार्य में बी.एड एवं बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में तुलनात्मक अंतर जानने का प्रयास किया गया है। शोध कार्य में परिकल्पनाओं की विवेचना के आधार पर मुख्य निष्कर्ष निकाला गया कि बी.एड एवं बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में तुलनात्मक अंतर नहीं पाया जाता है। बी.एड एवं बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि समान है। तथा बी.एड एवं बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थी षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते है।

1. परिचय (INTRODUCTION)

मनुष्य की प्रकृति (स्वभाव) है कि वह प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ कार्य करता है। कार्य करते रहने से वह कुछ सीखता भी है जहाँ पर कोई कमी या त्रुटि रह जाती है तो वह तदुपरान्त उसे सुधार लेता है। किसी भी प्रकार कही पर भी, किसी से भी, किसी समय प्राप्त किया हुआ ज्ञान ही शिक्षा है। सामाजिक, सांस्कृतिक गुण प्राप्त कर लेना शिक्षा है। शिक्षा मानव को समायोजन करना सीखाती है। संस्कार प्रदान करने वाली शिक्षा है। शिक्षा ही वह दीपक है जो कुपथ रूपी अंधकार को दूर कर सत्पथ रूपी उजाला प्रदान कर हमें सन्मार्ग पर चलाती है। यही शिक्षा हमारे देश के लिए अच्छे अध्यापक तैयार करती है, अच्छे अध्यापक तैयार करने के लिए एक ऐसी संस्था की आवश्यकता होती है जो उन्हें प्रशिक्षित कर सके। उन्हें षिक्षण विधियों एवं सिद्धान्तों का ज्ञान करवा सके। इन सब आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए षिक्षण महाविद्यालयों की आवश्यकता होती है। इन महाविद्यालयों में सेवा पूर्व व सेवारत अध्यापकों को षिक्षण दिया जाता है। सेवा पूर्व प्रषिक्षणार्थियों को जब षिक्षण अभ्यास करवाया जाता है तब वह इन्हें नियम पूर्वक पूरा करते है, लेकिन जब यही प्रषिक्षणार्थी अध्यापक बनते है, तब इनमें से कुछ ही प्रषिक्षण के दौरान सिखाये गये सिद्वान्तों एवं व्यवहारों को प्रयोग में लाते है और कुछ इसे आवश्यक नहीं समझते।

शैक्षिक उपलब्धि :

शिक्षा, सीखने का सामान्य रूप है जिसमें लागों के समूह के ज्ञान, कौशल और व्यवहार को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में षिक्षण प्रषिक्षण या अनुसंधान के माध्यम से साझा किया जाता है। शैक्षणिक उपलब्धि शिक्षा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। शैक्षणिक उपलब्धि का यह शब्द दर्शाता है कि छात्र अपने अध्ययनों के साथ कैसे व्यवहार करता है और कैसे वे अपने शिक्षकों द्वारा दिए गए विभिन्न कार्यों से सामना करते हैं या पूरा करते हैं। शैक्षणिक उपलब्धि शिक्षा का नतीजा है और यह पता लगाती है कि किस हद तक छात्र, शिक्षक या संस्थान ने अपने शैक्षिक लक्ष्यों को हासिल किया है।

शैक्षणिक उपलब्धि में छात्र की क्षमता होती है और जो छात्र शैक्षिक रूप से सफल होते हैं वे उच्च आत्मसम्मान प्राप्त करते हैं और उनकों निचले स्तर के अवसाद और चिंताएं नहीं रहती है। शैक्षणिक रूप से सफल छात्रों के पास दूसरों की तुलना में अधिक आत्मविश्वास होता है। शैक्षणिक सफलता महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह भविष्य के व्यवसायों की मांग की तकनीक से निपटने के लिए छात्रों को मदद करेगी।

षिक्षण का अर्थ एवं महत्त्व :

षिक्षण एक मानसिक प्रक्रिया है। उसमें बुद्धि का बुद्धि के साथ संबंध स्थापित किया जाता है। षिक्षण प्रक्रिया के दो महत्त्वपूर्ण पहलू होते हैं – एक अध्यापक, दूसरा – छात्र। अध्यापक छात्र के निर्दिष्ट आचरण में परिवर्तन संभव बनाता है। उसमें स्पष्ट लक्षणों का निर्माण करता है तथा ज्ञान–तत्व को विकास की गति प्रदान करता है, दूसरी ओर बालक अध्यापक का अनुसरण करता हुआ ज्ञान–पिपासा की तृप्ति करता है। इस प्रकार शिक्षक व छात्र में मानसिक प्रक्रिया गतिशील रहती है। इस मानसिक प्रक्रिया में अध्यापक की क्रिया को षिक्षण एवं छात्र की क्रिया को सीखना कहा जाता है। शिक्षण शिक्षा के उद्देश्यों का एक प्रभावी साधन है। शिक्षण छात्रों में वांछनीय निर्दिष्ट आचरण में परिवर्तन संभव बनाता है तथा उनमें रूचि, तत्परता व कौशल का विकास कर उनके व्यवहार को नियंत्रित व निर्देशित करता है। शिक्षण – शिक्षक व छात्र में सामंजस्य स्थापित करने वाला तत्व है। शिक्षण द्वारा शिक्षक व छात्र के मध्य विश्वास, श्रद्धा और सहयोग स्थापित किया जाता है, क्योंकि छात्रों के चरित्र निर्माण व दृष्टिकोण निर्माण में शिक्षक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्यापक का जैसा व्यक्तित्व होगा, जैसा प्रभावी षिक्षण होगा, छात्रों की बोध ग्राह्यता वैसी ही होगी।

शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण कार्य छात्रों के विकास को गति प्रदान करना है। इसके लिए उन्हें आवश्यकतानुसार समय–समय पर प्रेरणा व आवश्यक अभ्यास दिलाना है। शिक्षक का कार्य षिक्षण के द्वारा छात्रों को नवीन ज्ञान को नवीन सूचनाओं द्वारा परिपूरित कर उन्हें ज्ञान को व्यवस्थित करना, उनके विचारों की परिपक्वता को बढ़ाना है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रयास में प्रत्येक शिक्षक षिक्षण में सफल हो, प्रभावी हो, स्पष्ट ज्ञान देने वाला हो, यह आवश्यक नहीं।

शिक्षण–प्रक्रिया के तीन प्रमुख पहलू होते हैं –

1. *शिक्षक*
2. *विद्यार्थी*
3. *पाठ्यक्रम।*

शिक्षण प्रक्रिया इन तीनों में सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास करती है।

2. शोध कार्य का महत्त्व –

अध्यापक समाज के कर्णधार है। अतः ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो अच्छे कर्णधारों का निर्माण कर सके। इसके लिये आवश्यक है कि भावी अध्यापकों को उचित प्रषिक्षण दिया जाये। अनेकों सैद्धान्तिक कार्य के साथ व्यवहारिक ज्ञान भी दिया जाना चाहिए। समय के बदलते प्रवाह के साथ–साथ षिक्षण–प्रषिक्षण पाठ्यक्रम षिक्षण विधियाँ शैक्षिक सरंचना आदि वांछित परिवर्तन नहीं किये गये है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार समाज में वांछित परिवर्तन लाने हेतु शिक्षक समुदाय पर ही पूर्ण भरोसा करते हुए नई शिक्षा नीति के शिक्षक प्रषिक्षण कार्यक्रमो एवं उसकी गुणवता में मौलिक सुधार की व्यवस्था की है।

- *वर्तमान में शिक्षण कार्य परम्परागत ढंग से संचालित किया जा रहा है। अतः वर्तमान में आवश्यक दक्षताओं का विकास अध्यापकों में करने में असमर्थ है।*
- *व्यावहारिक शिक्षण केवल औपचारिकता मात्र ही होता है वास्तविक अध्यापन कौशलों का विकास नहीं किया जा रहा है।*
- *शिक्षण से सम्बधित नवाचार जैसे–सूक्ष्म षिक्षण, अन्तःक्रिया विश्लेषण, अभिक्रमित षिक्षण, अनुकरणीय षिक्षण, दल षिक्षण आदि का ज्ञान व्यवहारिक रूप में नही दिया जा रहा है।*
- *सेवारत अध्यापक अपने प्रषिक्षण के ज्ञान को व्यवहार में नही लाते है।*
- *बहुत से ऐसे व्यक्ति प्रतियोगी परिक्षाओं के दौरान चुन कर आते है। जिनकी अध्यापन के प्रति न तो अन्तर्मन की भावना होती है न अभिवृत्ति।*
- *अध्यापक शिक्षा में मूलभूत परिवर्तन करके देशव्यापी व्यावहारिक कार्यक्रम बनाना।*

इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षण कार्य में व्यावहारिकात का आभाव है इससे वांछित कौशलों का विकास नही हो पाता है। सैद्धान्तिक शिक्षण जितना होता है, उतना ही व्यावहारिक षिक्षण पर ध्यान दिया जाये। क्योंकि व्यावहारिक ज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कम हुआ है। शिक्षणका इतना महत्व होते हुए भी शोध के क्षेत्र में शिक्षण को नजर अन्दाज किया गया है। शिक्षण कार्य कोई व्यापार अथवा धन्धा नहीं है, बल्कि यह तो एक सेवा है जो सच्चे दिल से की जा सकती है। इस शोध के छात्रों की अपने षिक्षण कार्य के प्रति अभिवृत्ति के बारे में जानकारी मिल सकेगी।

3. समस्या कथन –

"बी.एकृ एवं बी.एस.टी.सी. प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

4. शोध अध्ययन के उद्देश्य –

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रषिक्षणार्थियों का षिक्षण अभ्यास तथा अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण में कितना तालमेल है, का अध्ययन करना है। फिर भी प्रस्तुत प्रयोजना में अनुसंधानकर्ता ने निम्नांकित उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए कार्य किया है:–

1. *बी.एड व बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।*
2. *बी.एड व बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।*

5. शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं –

इस शोधकार्य के अन्तर्गत शोधार्थी ने निम्न परिकल्पना निर्धारित की है:–

1. *बी.एड व बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।*
2. *बी.एड व बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।*

6. शोध अध्ययन की विधि, उपकरण, सांख्यिकी तकनीक –

विधि :

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि अपनाकर बी.एड. एवं बी.एस.टी.सी. प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। सर्वेक्षण विधि का उद्देश्य किसी इकाई को वर्तमान व्यवस्था एवं तथ्यों का अध्ययन करना तथा भावी शोध के लिये सुझाव देना है। सर्वेक्षण विधि का क्षेत्र बहुत व्यापक है। वर्तमान में क्या स्वरूप है? इसकी व्याख्या व विवेचना करना है। सामान्य सर्वेक्षण की परिस्थितियां अथवा सहसंबंध जो चालू है। प्रक्रियाएं जो चल रही है, अनुभव जो किये जा रहे है अथवा नवीन दिशाएं जो विकसित हो रही है उन्हीं से इसका संबंध है। सर्वेक्षण विधि का कार्य समस्या या घटना का विवरण करना है। सर्वेक्षण विधि को शैक्षणिक अनुसंधानों में बहुत काम में लाया जाता है, क्योंकि इसके कई लाभ है प्रथम तो यह स्थानीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय सभी शैक्षणिक क्षेत्रों में काम में लाई जाती है। इसमें व्याख्या, तुलना, मापन, वर्गीकरण, मूल्यांकन एवं सामान्यीकरण आदि सभी तरीकों का उपयोग किया जाता है।

उपकरण :

प्रदत्त सकलंन के लिये स्वःनिर्मित प्रश्नावाली व 'प्रोफेशनल कमीन्टमेन्ट स्केल फॉर टीचर एजूकेटरस' विशाल सूद के द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। उपकरण का विकास अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विषय विशेषज्ञो के सहयोग एवं निर्देशानुसार किया गया है।

सांख्यिकी तकनीक :

- *मध्य (माध्य)*
- *मानक विचलन*
- *क्रांतिक अनुपात*

7. शोध अध्ययन के न्यादर्श –

न्यादर्श के अन्तर्गत बीएड व बीएसटीसी के उन प्रषिक्षणार्थियों को लिया गया है जो अध्ययन कर रहे है। इसमें सम्मिलित दोनों बीएड व बीएसटीसी के प्रषिक्षणार्थियों की कुल संख्या 600 है जिनमें 300 बी.एड. प्रषिक्षणार्थी व 300 बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों को लिया गया है। जिनमें बी.एड. प्रथम वर्ष के 150 प्रषिक्षणार्थी व बी.एड. द्वितीय वर्ष के 150 प्रषिक्षणार्थी है। इसी तरह बीएसटीसी प्रथम वर्ष के 150 प्रषिक्षणार्थी व बीएसटीसी द्वितीय वर्ष के 150 प्रषिक्षणार्थी है। बी.एड. व बीएसटीसी के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के प्रत्येक 150 प्रषिक्षणार्थियों में से 75 महिला प्रषिक्षणार्थी व 75 पुरूष प्रषिक्षणार्थी है।

8. मुख्य निष्कर्ष चर्चा –

वर्तमान शोध कार्य में बी.एड एवं बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में तुलनात्मक अंतर जानने का प्रयास किया गया है। शोध कार्य 600 बी.एड एवं बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों पर किया गया। शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रदत्त सकलंन के लिये स्वःनिर्मित प्रश्नावाली व 'प्रोफेशनल कमीन्टमेन्ट स्केल फॉर टीचर एजूकेटरस' विशाल सूद के द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य में परिकल्पनाओं की विवेचना के आधार पर मुख्य निष्कर्ष निकाला गया कि बी.एड एवं बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में तुलनात्मक अंतर नहीं पाया जाता है। बी.एड एवं बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि समान है। तथा बी.एड एवं बीएसटीसी प्रषिक्षणार्थी षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते है।

9. भावी शोध हेतु सुझाव –

1. *वर्तमान अध्ययन का न्यादर्श 600 तक सीमित है जिसमें से बी.एड. व बी. एस.टी.सी. के 300–300 छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं को लिया गया है। इस न्यादर्श की संख्या को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।*
2. *वर्तमान अध्ययन बी.एड. व बी.एस.टी.सी. तक ही सीमित है। भविष्य में ऐसा अध्ययन अन्य कक्षा स्तरों को लेकर अध्ययन किया जा सकता है।*
3. *वर्तमान अध्ययन में सेवापूर्ण प्रषिक्षणार्थियों की अभ्यास षिक्षण के प्रति अभियोग्यताओं से संबंधित है। वर्तमान में यह अध्ययन सेवारत अध्यापकों की षिक्षण के प्रति अभियोग्यताओं का अध्ययन भी किया जा सकता है।*
4. *इस अध्ययन में प्रषिक्षणार्थियों को शामिल किया गया है। भविष्य में इनमें महाविद्यालयों के प्राचार्यों को भी शामिल किया जा सकता है।*
5. *वर्तमान अध्ययन क्षेत्र हनुमानगढ़ जिले के प्रषिक्षणार्थियों तक ही सीमित है। भविष्य में इसे अन्य जिलों के महाविद्यालयों के प्रषिक्षणार्थियों पर भी किया जा सकता है।*

10. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अरोड़ा, श्रीमती रीता (2005), ''षिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार'' षिक्षा प्रकाषन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326–327*
2. *आर्य हरफूल (2000), ''रिसर्च पब्लिकेशन्स'' नई दिल्ली, पृ.96*
3. *उपाध्याय, विनोद कुमार (2004), अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं षिक्षण पृ.सं. 294*
4. *कपिल, एच के. (1998), अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या–23*
5. *कोठारी, सी.आर. (2008), ''अनुसंधान विधिषास्त्र विधियाँ और तकनीकी'' न्यूरोज इन्टरनेषनल लिमिटेड पब्लिकेषन कारपोरेषन, आगरा पृष्ठ संख्या–2*
6. *मुकुन्द देवधर (2003), ''अच्छा भावी षिक्षक कौन'', जुलाई, निदेषक, माध्यमिक षिक्षा राजस्थान, बीकानेर, पृ.सं.9*
7. *त्रिवेदी आर.एन. एवं शुक्ला डी.पी. (2008), रिसर्च मैथ्डोलॉजी' कॉलेज बुक डिपो जयपुर पेज 321*
8. *नालन्दा शब्द कोष (1991) आदर्श बुक डिपो नई दिल्ली*